

*Versprechen* WILSON; vgl. प्रतिश्रुत्का.

प्रतिश्रुत् (wie eben) n. *Versprechen, Verlobung* ÇĀṆKH. GRHJ. 1, 7, 9, 8, 10. — Vgl. u. श्रुत् mit प्रति.

प्रतिश्रुति (wie eben) f. *Widerhall* HARIV. 4882. ÇATR. 1, 15.

प्रतिश्रुत्का (von प्रतिश्रुत्) f. dass. VS. 24, 32, 30, 19. KAUSH. UP. in Ind. St. 1, 419.

प्रतिश्रोतम् s. प्रतिश्रोतम्.

प्रतिश्लोकम् (1. प्र + श्लोक) adj. bei jedem Çloka Bhaṅ. P. 1, 5, 11.

प्रतिशैव्य (von सिच् mit प्रति) adj. zu begiessen TBA. 2, 1, 2, 2.

प्रतिशिव्य (von सिच् mit प्रति) ved. adj. P. 3, 1, 123.

प्रतिषेक (von सिच् mit प्रति) m. das Begiessen: नलेन TBA. Comm. II, 376.

प्रतिषेद्ध (von सिच् mit प्रति) nom. ag. *Abwehler, Zurückhalter, Hinderer* TRIK. 3, 4, 18. यदा तु प्रतिषेद्धारं पापो न लभते वाचित् । तिष्ठति बद्ध्वा लोकास्तदा पापेषु कर्मसु ॥ MBH. 1, 6851. पापस्य 6850. 4, 67, 7, 273. 12, 3895. R. GORR. 1, 22, 9. *Hinderer, sich widersetzend*; mit dem acc. der Sache: के यं प्रतिषेद्धारो धर्मराजस्य शासनम् Bhaṅ. P. 6, 1, 32.

प्रतिषेद्धव्य (wie eben) adj. *abzuwehren, zurückzuhalten* MBH. 12, 3916. R. GORR. 1, 33, 2.

प्रतिषेध (wie eben) m. 1) *Abwehr, Abhaltung, Zurückhaltung, Vertreibung* (einer Krankheit u. s. w.): तस्कर° M. 9, 266. MBH. 1, 462. 12, 399. 3697. अकार्ये Kām. NITIS. 3, 50. Suçr. 1, 11, 18. 2, 331, 15. 337, 12. — 2) *Verbot, Verneinung, Aufhebung*: मांस° KĀTJ. ÇR. 1, 1, 21, 7, 5, 27. भक्त° 1, 2, 8. 4, 3, 5. 7, 1, 34. 5, 24. रिक्त° NIR. 3, 5, 9, 10, 11, 18. ĀÇV. ÇR. 5, 13. P. 3, 4, 18. VĀRTI. zu P. 1, 1, 4. 72. KĀR. zu P. 3, 1, 22. KĀC. zu P. 1, 1, 11. नेति प्रतिषेधः । वेति विकल्पः Schol. zu P. 1, 1, 44. 7, 2, 64 (wo इत्यादिमूत्रेष्वेव zu lesen ist). केन प्राप्तवयं प्रतिषेध आरभ्यते Schol. zu RV. PRĀT. 10, 11 (Sūtra 18). BHĀG. P. 2, 10, 45. ÇĀṆKH. zu BRH. ĀR. UP. S. 39. zu KHĀND. UP. S. 32. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 111. Schol. zu KAP. 1, 54. so v. a. *abschlägige Antwort* RAGH. 5, 58. प्रतिषेधान्तरं dass. ÇĀK. 73, v. 1. प्रतिषेधे द्वयोः wenn es Beiden verboten war JĀG. 2, 285. so v. a. *Negation, Verneinungswort* VS. PRĀT. 3, 24. प्रतिषेधाधीय NIR. 1, 4. *Einschärfung eines Verbots, Erinnerung an ein bestehendes Verbot* KUALAJ. 154, b.

प्रतिषेधक (wie eben) adj. f. °धिका *verbotend* MBH. 6, 139. Gegens. अनुमत्तरं AGNI-P. im ÇKDR. negierend TAITT. PRĀT. 2, 10.

प्रतिषेधन (wie eben) 1) adj. *abwehrend*: (अस्त्रम्) तदप्रतिक्तं दिव्यं सर्वास्त्रप्रतिषेधनम् MBH. 3, 11988. — 2) n. *das Abwehren, Abhalten, Zurückhalten, Vertreiben* (einer Krankheit u. s. w.): अमित्र° Kām. NITIS. 13, 23. MBH. 3, 7468. न धर्मात्प्रतिषेधनम् Zurückhalten von M. 10, 126. न चास्य धर्मे प्रतिषेधनम् MBH. 12, 10887. दुःखानाम् 13, 5190. Suçr. 1, 11, 3. असहादिप्रयुक्तानां वाक्यानां प्र° *das Abweisen, Zurückweisen, Widerlegen* 2, 356, 13.

प्रतिषेधनीय (wie eben) adj. *zurückzuhalten*: तस्त्रयाहं नात्र विषये °यः PANĀT. 171, 25. zu *verhindern*: सर्ग (= निश्चय) RAGH. 14, 42.

प्रतिषेधोक्ति (प्र + उक्ति) f. *Ausdruck der Verneinung, — des Verbots, — der Abwehr, — des Widerspruchs* KĀVJĀD. 2, 120.

प्रतिषेधोपमा (प्र + उपमा) f. *eine negative Vergleichung* KĀVJĀD. 2, 34.

प्रतिष्क m. *Bote* (दूत) ÇABDAR. im ÇKDR. Späher WILS. nach ders.

Aut. — Vgl. die folg. Wörter.

प्रतिष्कश m. P. 6, 1, 152 (von कश्च mit प्रति). SIDDH. K. im gaṇa प-चादि zu P. 3, 1, 134. *Bote; Geführte; Führer* P., Sch. TRIK. 3, 3, 431. MED. c. 36. H. an. 4, 313 (wo fälschlich प्रतिष्ठाणः gedruckt ist). *ein lederner Riemen* (vgl. कशा *Peitsche*) ÇABDAR. bei WILSON.

प्रतिष्कष m. = प्रतिष्कश *ein lederner Riemen* ĠATĀDH. im ÇKDR.

प्रतिष्कस m. *Späher* ÇABDAR. im ÇKDR.

प्रतिष्कुत s. श्रु°.

प्रतिष्ठम् (von स्तम् mit प्रति) m. *Hemmung, Hemmniss, Hinderniss* AK. 3, 3, 27. H. 1498. DhĀTUP. 15, 14. बाहुप्रतिष्ठम्बिवृद्धमन्यु RAGH. 2, 32. °विमुक्तबाहु 59.

प्रतिष्ठति (von स्तु mit प्रति) f. *Lob, Preis*: वाचन् हि प्रतिष्ठतिम् RV. 8, 13, 33. PAÑKAV. BR. 16, 8, 5, 11, 14.

प्रतिष्ठित (wie eben) nom. ag. *laudator aemulus* ĀÇV. ÇR. 5, 7.

प्रतिष्ठे (स्या mit प्रति) 1) adj. f. आ a) *feststehend* ÇAT. BR. 12, 5, 2, 9. अस्यां ध्रुवायां मध्यमायां प्रतिष्ठायो दिशि AIR. BR. 8, 14. 19. अक्षमङ्गरः प्रतिष्ठः MBH. 3, 1789. — b) *widerstehend*: अयक्ताः प्रतिष्ठाः KAUC. 20. — 2) m. N. pr. des Vaters von Supārçva, dem 7ten Arhant der gegenwärtigen Avasarpinī, H. 36. — 3) f. आ N. pr. einer der Mütter im Gefolge des Skanda MBH. 9, 2647.

प्रतिष्ठा (wie eben) f. 1) *das Stehenbleiben, Stillstand*: प्रतिष्ठायै च-रित्राय VS. 13, 19. ÇAT. BR. 1, 9, 2, 10. वज्रस्य AIR. BR. 3, 8, 8, 8. *das Bleiben, Beharren in*: सत्यप्रतिष्ठायाम् क्रियाफलाश्रयत्वम् JOGAS. 2, 36. fgg. अ-तद्रूपप्रतिष्ठ 1, 8. — 2) *Standort, Standpunkt; Grund, Unterlage, Fundament, Stütze*: = आस्पद P. 6, 1, 146. AK. 3, 4, 16, 96. = स्थान MED. 1h. 13. = स्थिति H. an. 3, 176. अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठाम् RV. 5, 47, 7. 10, 106, 9. TS. 4, 3, 44, 4. VS. 2, 25. AIR. BR. 1, 30. इयं वा घोषधीनां प्रति-ष्ठा 2, 6, 3, 6, 3, 15. याभिर्दृक्कृताः प्रतिष्ठाम् TBR. 1, 2, 4, 4, 3, 2, 9, 11. ÇAT. BR. 12, 2, 1, 3. दिशो वेद सप्रतिष्ठाः 14, 6, 9, 20. Himmel und Erde sind प्रतिष्ठे वसूनाम् AV. 4, 26, 1. die Erde ist प्र° (ḗdōc) 18, 4, 5. ÇAT. BR. 1, 9, 1, 29. ÇĀṆKH. ÇR. 15, 1, 38. 16, 22, 13. KATHOP. 1, 14. TAITT. UP. 2, 1. ब्रह्मविद्या सर्वविद्याप्रतिष्ठाम् MUNJ. UP. 1, 1, 1. — शब्दवाङ्मयमनीषु ग-ताः प्रतिष्ठाम् (पवनादयः) Suçr. 2, 307, 10. त्रिनेतामं गगनप्रतिष्ठाम् (adj.) im Himmel befindlich ÇĀK. 165. वेदिप्रतिष्ठान् — पूयन् RAGH. 16, 35. सर्वप्रतिष्ठा जगतीम् Standort —, Behälter für Alles R. 5, 62, 9. त्वं सर्वस्य भुवनस्य प्रसूतिस्त्वमेवाग्रे भवसि पुनः प्रतिष्ठा Stütze, Halt MBH. 1, 8417 = 3, 487, 7, 117. ब्राह्मणानां प्रतिष्ठामीत्स्नेतसामिव सागरः 290, 14, 1950. BHAG. 14, 27. नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै MĀRK. P. 85, 11. कुलवंशप्रतिष्ठा हि पितरः पुत्रमब्रुवन् MBH. 1, 3090. परिग्रहबद्धवे ऽपि हे प्रतिष्ठे कुल-स्य मे । समुद्रवसना चोर्वी सखी च युवयोरियम् ॥ ÇĀK. 68. कुल° 151. वं-श° 111, 18. अचलप्रतिष्ठ (समुद्र) Spr. 362. MÜLLER, SL. 121. वाक्प्रतिष्ठे व्यवहारम् auf Worten beruhend RĀGA-TAR. 6, 58. गायामिस्तत्प्रतिष्ठा-भिः auf ihn bezüglich HARIV. 2837. — 3) *Ort des Anhalts, — Bleibens, Heimath, Wohnstätte*: = तिति MED. मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठा विदत्त AV. 6, 32, 3. ĀÇV. GRHJ. 3, 10. TS. 5, 4, 2, 2. गृहा वै प्रतिष्ठा ÇAT. BR. 1, 1, 1, 19. ब्रह्मलोकप्रतिष्ठा च लभते दैवचित्तकः VARĀH. BRH. S. 2, 13. (इयं दिक्) स-दा सलिलराजस्य प्र° MBH. 3, 3801. मर्कौ प्रतिष्ठामध्यस्य — स्वायम्भुवो मनुः Bhaṅ. P. 3, 20, 1. आसीत्प्रतिष्ठाने — प्रतिष्ठा धर्मराजस्य मुद्युम्नस्य